पचौरी को अब प्रधानमंत्री का सहारा

नई दिल्ली, (भाषा): हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने को लेकर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी) की अपुष्ट खबरों के लिए आलोचना का शिकार बने आर.के. पचौरी का प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने आज खुलकर बचाव किया। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों का सामना करने में पचौरी को उनके योगदान के लिए जो अंतर्राष्ट्रीय सम्मान और ख्याति मिली है, वह उसके हकदार हैं। श्री सिंह ने यहां दिल्ली सतत विकास के दसवें शिखर सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि आईपीसीसी की प्रक्रिया और उसके नेतृत्व में भारत को पूरा विश्वास है और वह उसका समर्थन करेगा। उन्होंने हालांकि, यह भी कहा कि ''आईपीसीसी के कार्य में उसके विज्ञान संबंधी कुछ पहलुओं को आलोचना का सामना करना पड़ा है।'' उन्होंने कहा, ऊर्जा सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन की दोहरी चुनौतियों का सामना करने में पचौरी के नेतृत्व में ऊर्जा अनुसंधान संस्थान (टेरी) के योगदान को उचित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान और मान्यता मिली है। नोबेल पुरस्कार विजेता पचौरी को आईपीसीसी की 2007 की रिपोर्ट के उन कुछ पहलुओं के लिए विभिन्न क्षेत्रों से कड़ी आलोचनाओं का सामना करना पड़ रहा है जिसमें हिमालय के ग्लेशियरों के पिघलने की रफ्तार का 'गलत' उल्लेख किया गया है । पचौरी यह कह कर इस्तीफा देने से पहले ही इंकार कर चुके हैं कि यह गलती 'दुर्भाग्यपूर्ण' है लेकिन वह आईपीसीसी मूल्यांकन की पांचवीं रिपोर्ट तैयार करने के कार्य को पूरा करने में जुटे रहेंगे।

कोपेनहेगन में होना चाहिए था समझौता

प्रधानमंत्री ने जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर वैश्विक आम राय के अभाव पर खेद प्रकट करते हुए औद्योगिक देशों से कहा कि वे भविष्य के अपने उत्सर्जन को नियंत्रित करने की दिशा में पहल करें। उन्होंने विकसित देशों से यह भी कहा कि वे ग्रीन हाउस गैसों के संग्रह में अपनी भूमिका को 'और अधिक स्पष्टता' से स्वीकार करें। जलवायु परिवर्तन पर हुए कापेनहेगन सम्मेलन में सीमित उपलब्धियों पर खेद जताते हुए सिंह ने कहा कि भारत वहां हुए समझौते का पूरा समर्थन करता है और उसे आगे ले जाएगा।